पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

आम जनता को राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान की पूरी कविता की जानकारी होनी चाहिए - राज्यपाल

लखनऊः 10 मई, 2016

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने लखनऊ बंगीय नागरिक समाज द्वारा गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर की 155वीं जयंती पर आयोजित एक कार्यक्रम में अपने सम्बोधन के बाद श्री उदय सिंह खत्री और उनकी पुत्री द्वारा रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा रचित कविता 'जन गण मन' की पूरी पंक्तियाँ गायन पर प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे पूर्व उन्होंने कभी जन मन गण की 31 पंक्तियों का पाठ करते नहीं सुना था। आम लोगों को भी पूरी कविता की जानकारी होनी चाहिए। उल्लेखनीय है कि 'राष्ट्रगान' के रूप में पूरी कविता का कुछ ही अंश गाया जाता है।

राज्यपाल श्री नाईक ने कहा है कि गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर बांग्ला साहित्य के शिरोमणि कवि थे, उनकी कविता में प्रकृति के सौंदर्य और कोमलतम मानवीय भावनाओं का उत्कृष्ट चित्रण है। वर्ष 1911 में उनके द्वारा रचित 'जन गण मन' एक विशिष्ट कविता है जिसके प्रथम छंद को 'राष्ट्रगान' होने का गौरव प्राप्त है। यह कविता अपने मूल बंगाली रुप में जानकारी के लिए प्रस्तुत है,

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मंगल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे ।। 1 ।।

अहरह तव आव्हान प्रचारित
शुनि तव उदार वाणी
हिन्दु बौद्ध शिख जैन
पारसिक मुसलमान खुष्टानी
पूरब पश्चिम आशे
तव सिंहासन पाशे
प्रेमहार हय गॉथा
जन गण ऐक्य विधायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे ।। 2 ।।

पतन अभ्युदय-बन्धुर-पंथा
युगयुग धावित यात्री,
हे चिर-सारथी,
तव रथचक्रे मुखरित पथ दिन-रात्रि
दारुण विप्लम-माझे

तव शंखध्वनि बाजे,
संकट-दुख-त्राता,
जन-गण-पथ-परिचायक जय हे
भारत-भाग्यन-विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे ।। 3 ।।

घोर-तिमिर-घन-निविड-निशीथे
पीड़ित मुच्छित-देशे
जाग्रत छिल तव अविचल मंगल
नत-नयने अनिमेषे
दुःस्वप्ने आतंके
रक्षा करिले अंके
स्नेहमयी तुमि माता,
जन-गण-दुखत्रायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे ।। 4 ।।

रात्रि प्रभालित उदिल रविछवि
पूर्व-उदय-गिरी-भाले,
गाहे विहन्गम, पुण्य समीरण
नव-जीवन-रस ढाले,
तव करुणारुण-रागे
निद्रित भारत जागे
तव चरणे नत माथा,
जय जय जय हे, जय राजेश्वर,
भारत-भाग्य-विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे ।। 5 ।।

श्री नाईक ने आगे कहा है कि ठीक इसी प्रकार हमारा 'राष्ट्रगीत' 'वन्दे मातरम्' बंगाल के प्रसिद्ध लेखक बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा 1882 में लिखे उपन्यास 'आनंदमठ' से लिया गया है। मूलतः 5 छंदों में लिखे गए इस गीत का पहला छंद 'राष्ट्रगीत' के रुप में गाया जाता है। गीत 'वन्दे मातरम्' अपने मूल बंगाली रुप में जानकारी के लिए प्रस्तुत है,

वन्दे मातरम् ।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यशामलां मातरम् ।
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीं
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीं
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीं
सुखदां वरदां मातरम् वन्दे मातरम् । ।। 1 ।।

कोटि-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले,
कोटि-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले,
अबला केन मा एत बले ।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं
रिपुदलवारिणीं मातरम् वन्दे मातरम् । ।। 2 ।।

तुमि विद्या, तुमि धर्म
तुमि हृदि, तुमि मर्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गडि मन्दिरे-मन्दिरे मातरम् वन्दे मातरम् ।।। 3 ।।

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
कमलां अमलां अतुलां सुजलां सुफलां मातरम् वन्दे मातरम् ।।। 4 ।।

श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषितां
धरणीं भरणीं मातरम् वन्दे मातरम् ।। ।। 5 ।।

राज्यपाल श्री नाईक ने अंत में कहा कि गीत 'वन्दे मातरम्' 1882 में लिखा गया तथा 'जन गण मन' 1911 में लिखा गया था, जब देश आजाद नहीं हुआ था। शायद ही किसी को यह आभास रहा हो कि देश की आजादी के बाद दोनों उत्कृष्ट रचनाओं को 'राष्ट्रगीत' एवं 'राष्ट्रगान' के रूप में गाया जायेगा।

अंजुम/ललित/राजभवन (177/12)